

मौर्यकालीन शासन में केंद्रीकरण और स्थानीय स्वायत्तता : एक आलोचनात्मक विश्लेषण

रवि प्रकाश

शोधार्थी, इतिहास विभाग

पूर्णिया विश्वविद्यालय, पूर्णिया, बिहार

परिचय

मौर्य साम्राज्य (321 ईसा पूर्व से 185 ईसा पूर्व) भारतीय इतिहास में एक स्वर्णिम युग के रूप में उभरा, जिसने विशाल भौगोलिक क्षेत्र को एक शक्तिशाली और संगठित शासन प्रणाली के अंतर्गत एकीकृत किया। चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा स्थापित और सम्राट अशोक द्वारा समृद्ध यह साम्राज्य अपनी प्रशासनिक कुशलता, आर्थिक समृद्धि और सामाजिक नीतियों के लिए विख्यात है। मौर्यकालीन शासन की सबसे उल्लेखनीय विशेषता इसकी केंद्रीकृत प्रशासनिक संरचना थी, जो सम्राट के नेतृत्व में संचालित होती थी, साथ ही स्थानीय स्तर पर प्रदान की गई सीमित स्वायत्तता थी, जो साम्राज्य की सांस्कृतिक और भौगोलिक विविधता को समायोजित करती थी। यह आलेख मौर्यकालीन शासन में केंद्रीकरण और स्थानीय स्वायत्तता के बीच के जटिल संबंधों का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसमें इन दोनों तत्वों की शक्तियों और सीमाओं पर प्रकाश डाला गया है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र और मेगस्थनीज के इंडिका जैसे ऐतिहासिक स्रोतों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि मौर्य शासन ने एक मजबूत केंद्रीय प्राधिकार स्थापित किया, जो सम्राट के इर्द-गिर्द केंद्रित था। सम्राट न केवल राजनीतिक, बल्कि नैतिक और धार्मिक नेतृत्व भी प्रदान करता था, जैसा कि अशोक के शिलालेखों से पता चलता है। केंद्रीकरण ने साम्राज्य को एकता और स्थिरता प्रदान की, परंतु इसने स्थानीय आवश्यकताओं को संबोधित करने में कठिनाइयां भी उत्पन्न कीं। दूसरी ओर, स्थानीय स्वायत्तता ने ग्राम और नगर स्तर पर प्रशासन को लचीलापन प्रदान किया, जिससे स्थानीय रीति-रिवाजों और परंपराओं का सम्मान संभव हुआ। यह संतुलन मौर्य साम्राज्य की सफलता का आधार बना, लेकिन इसकी कमजोरियां भी उजागर हुईं, खासकर अशोक के बाद के कमजोर उत्तराधिकारियों के शासनकाल में। यह आलेख इस संतुलन की गतिशीलता, इसके प्रभावों और मौर्य साम्राज्य के उत्थान-पतन में इसकी भूमिका का विश्लेषण करता है, जो आधुनिक प्रशासनिक प्रणालियों के लिए भी प्रासंगिक सबक प्रदान करता है।

मुख्य शब्द : स्वायत्तता, केंद्रीकृत, प्रशासनिक, नियंत्रण, जवाबदेह, स्वायत्तता।

मौर्यकालीन शासन में केंद्रीकरण

मौर्यकालीन शासन में केंद्रीकरण साम्राज्य की रीढ़ था, जिसने विशाल क्षेत्र को एकीकृत और संगठित किया। सम्राट सर्वोच्च प्राधिकारी था, जो राजनीतिक, धार्मिक और नैतिक नेतृत्व प्रदान करता था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार, साम्राज्य को प्रांतों में विभाजित किया गया, जिनका नियंत्रण केंद्रीय रूप से नियुक्त राज्यपालों के हाथों में था। कर संग्रह, व्यापार नियमन और मुद्रा प्रणाली पर कड़ा केंद्रीय नियंत्रण था, जिसने आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित की। जासूसों की व्यापक प्रणाली ने सम्राट को साम्राज्य की निगरानी में सहायता दी। केंद्रीकरण ने साम्राज्य को एकता, प्रशासनिक दक्षता और सैन्य शक्ति प्रदान की, जिससे मौर्य साम्राज्य भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे शक्तिशाली साम्राज्य बना। हालांकि, अत्यधिक केंद्रीकरण ने स्थानीय लचीलापन सीमित किया और नौकरशाही जटिलता को जन्म दिया, जो अशोक के बाद कमजोर उत्तराधिकारियों के शासन में साम्राज्य के पतन का कारण बना। तथापि मौर्य साम्राज्य में एक मजबूत केंद्रीय प्रशासन था, जिसका नियंत्रण सम्राट के हाथों में था। निम्नलिखित बिंदु केंद्रीकरण के प्रमुख पहलुओं को दर्शाते हैं :-

1. सम्राट की सर्वोच्चता

मौर्यकालीन शासन में सम्राट की सर्वोच्चता केंद्रीकरण का मूल आधार थी, जो साम्राज्य की एकता और स्थिरता का प्रतीक थी। सम्राट न केवल राजनीतिक प्राधिकारी था, बल्कि सामाजिक, धार्मिक और नैतिक नेतृत्व भी प्रदान करता था। चंद्रगुप्त मौर्य ने कौटिल्य की सहायता से एक मजबूत केंद्रीकृत शासन स्थापित किया, जिसे अशोक ने अपनी धम्म नीति के माध्यम से और सुदृढ़ किया। अशोक के शिलालेखों से स्पष्ट है कि सम्राट साम्राज्य की नीतियों का केंद्र बिंदु था, जो सामाजिक सुधारों, धार्मिक सहिष्णुता और प्रशासनिक दिशानिर्देशों को लागू करता था। अर्थशास्त्र में वर्णित है कि सम्राट का प्रत्यक्ष नियंत्रण प्रशासन, सेना और अर्थव्यवस्था पर था। वह केंद्रीय मंत्रिपरिषद और अधिकारियों की नियुक्ति करता था, जो उसकी इच्छा के अनुसार कार्य करते थे। सम्राट की यह सर्वोच्चता साम्राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में एकरूपता लाने में सहायक थी, क्योंकि सभी प्रांत और स्थानीय इकाइयां उसके प्रति जवाबदेह थीं। उदाहरण के लिए, अशोक ने अपने शिलालेखों के माध्यम से साम्राज्य के सुदूर क्षेत्रों में भी अपनी नीतियों का प्रसार किया। हालांकि, यह सर्वोच्चता सम्राट की व्यक्तिगत क्षमता पर अत्यधिक निर्भर थी। अशोक जैसे सक्षम शासक ने इस प्रणाली को प्रभावी बनाया, लेकिन कमजोर उत्तराधिकारियों के शासन में यह ढांचा चरमरा गया। अत्यधिक केंद्रीकरण ने स्थानीय स्तर पर स्वायत्तता को सीमित किया, जिससे क्षेत्रीय असंतोष बढ़ा। सम्राट की सर्वोच्चता ने साम्राज्य को एकजुट रखा, परंतु इसकी कठोरता ने मौर्य साम्राज्य के पतन में भी योगदान दिया, क्योंकि यह लचीलेपन और स्थानीय आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशीलता में कमी लाया।

2. प्रशासनिक ढांचा

मौर्यकालीन शासन का प्रशासनिक ढांचा केंद्रीकरण का एक उत्कृष्ट उदाहरण था, जो साम्राज्य की विशालता और विविधता को संभालने में सक्षम था। अर्थशास्त्र और मेगस्थनीज के इंडिका के अनुसार, साम्राज्य को कई प्रांतों में विभाजित किया गया था, जैसे तोशलि, उज्जयिनी, तक्षशिला और सुवर्णगिरी, जिनका नेतृत्व सम्राट द्वारा नियुक्त राज्यपाल (कुमार या आर्यपुत्र) करते थे। ये राज्यपाल केंद्रीय नीतियों को लागू करने और सम्राट के प्रति जवाबदेह रहने के लिए जिम्मेदार थे। प्रत्येक प्रांत में एक सुसंगठित नौकरशाही थी, जिसमें राजस्व, न्याय और सैन्य प्रशासन के लिए अलग-अलग अधिकारी नियुक्त थे। केंद्रीय स्तर पर मंत्रिपरिषद और अमात्य जैसे उच्च अधिकारी सम्राट को नीति निर्माण और शासन संचालन में सहायता प्रदान करते थे। इस ढांचे ने साम्राज्य में एकरूपता और व्यवस्था सुनिश्चित की। कर संग्रह, व्यापार नियमन और सैन्य संगठन पर केंद्रीय नियंत्रण ने साम्राज्य की आर्थिक और सैन्य शक्ति को बढ़ाया। जासूसों (गूढपुरुष) की प्रणाली ने प्रशासनिक निगरानी को और सुदृढ़ किया, जिससे सम्राट को साम्राज्य के हर कोने की जानकारी प्राप्त होती थी। हालांकि, इस जटिल प्रशासनिक ढांचे की कुछ कमियां भी थीं। नौकरशाही की जटिलता ने भ्रष्टाचार और अक्षमता को जन्म दिया। इसके अलावा, केंद्रीकृत ढांचा स्थानीय परिस्थितियों के प्रति लचीला नहीं था, जिससे कुछ क्षेत्रों में असंतोष उत्पन्न हुआ। अशोक के शासनकाल में यह ढांचा प्रभावी रहा, लेकिन उनके उत्तराधिकारियों की कमजोरी ने इसे अस्थिर कर दिया। इस प्रकार, मौर्यकालीन प्रशासनिक ढांचा केंद्रीकरण की शक्ति को दर्शाता है, परंतु इसकी अत्यधिक कठोरता ने साम्राज्य के पतन में भी योगदान दिया।

3. आर्थिक नियंत्रण

मौर्यकालीन शासन में आर्थिक नियंत्रण केंद्रीकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू था, जिसने साम्राज्य की समृद्धि और स्थिरता को सुनिश्चित किया। कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार, मौर्य प्रशासन ने कर संग्रह, व्यापार और उद्योगों पर कड़ा नियंत्रण रखा। कृषि, जो अर्थव्यवस्था का आधार थी, पर राज्य द्वारा निर्धारित कर लगाए जाते थे, जिन्हें केंद्रीय रूप से संग्रहित और प्रबंधित किया जाता था। भू-राजस्व, व्यापारिक कर और शिल्प पर कर साम्राज्य की आय के प्रमुख स्रोत थे। इसके अतिरिक्त, मौर्य शासन ने मानकीकृत मुद्रा और तौल-माप की प्रणाली लागू की, जिसने व्यापार को सुगम बनाया। राजकीय कोषागारों का प्रबंधन केंद्रीय अधिकारियों द्वारा किया जाता था, जो सम्राट के प्रति जवाबदेह थे। अर्थशास्त्र में उल्लेखित विभिन्न अधिकारियों, जैसे

कोषाध्यक्ष और समाहर्ता, ने आर्थिक संसाधनों के संग्रह और वितरण पर निगरानी रखी। यह केंद्रीकृत आर्थिक प्रणाली साम्राज्य की सैन्य और प्रशासनिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम थी। इससे साम्राज्य में सड़कों, सिंचाई और व्यापारिक केंद्रों का विकास हुआ। हालांकि, इस नियंत्रण ने स्थानीय व्यापारियों और किसानों पर अत्यधिक दबाव डाला, जिससे कुछ क्षेत्रों में असंतोष उत्पन्न हुआ। अत्यधिक कराधान और कठोर नियमों ने आर्थिक स्वायत्तता को सीमित किया, जिसके परिणामस्वरूप कुछ स्थानीय समुदायों में असंतुलन पैदा हुआ। अशोक के शासनकाल में यह प्रणाली प्रभावी रही, परंतु कमजोर उत्तराधिकारियों के समय में आर्थिक नियंत्रण की कठोरता ने साम्राज्य की स्थिरता को कमजोर किया। इस प्रकार, आर्थिक नियंत्रण ने मौर्य साम्राज्य को शक्ति प्रदान की, लेकिन इसकी कठोरता ने दीर्घकालिक स्थिरता को प्रभावित किया।

4. जासूसी और निगरानी

मौर्यकालीन शासन में जासूसी और निगरानी की प्रणाली केंद्रीकरण का एक महत्वपूर्ण उपकरण थी, जिसने सम्राट को साम्राज्य पर नियंत्रण बनाए रखने में सहायता प्रदान की। अर्थशास्त्र में वर्णित गूढ़पुरुष (जासूस) साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों में सूचनाएं एकत्र करते थे, जिससे सम्राट को प्रशासन, जनता और संभावित विद्रोहों की जानकारी प्राप्त होती थी। ये जासूस विभिन्न रूपों में, जैसे व्यापारी, साधु या सामान्य नागरिक, के भेष में कार्य करते थे, जिससे वे साम्राज्य की गतिविधियों पर गुप्त रूप से नजर रख सकें। इस प्रणाली ने सम्राट को प्रांतों, अधिकारियों और स्थानीय नेताओं के कार्यों की निगरानी करने में सक्षम बनाया। अशोक के शिलालेखों से पता चलता है कि उन्होंने धर्ममहामात्र जैसे अधिकारियों को नियुक्त किया, जो न केवल धार्मिक नीतियों को लागू करते थे, बल्कि सामाजिक और प्रशासनिक व्यवस्था पर भी नजर रखते थे। यह निगरानी प्रणाली आंतरिक स्थिरता और बाहरी खतरों से निपटने में प्रभावी थी। हालांकि, इस प्रणाली ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सीमित किया और स्थानीय स्तर पर अविश्वास को जन्म दिया। जासूसों पर अत्यधिक निर्भरता ने नौकरशाही में जटिलता और भ्रष्टाचार की संभावना को बढ़ाया। अशोक के बाद के शासकों में इस प्रणाली को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने की क्षमता की कमी ने साम्राज्य की एकता को कमजोर किया। इस प्रकार, जासूसी और निगरानी ने मौर्य शासन को सुदृढ़ किया, लेकिन इसकी अत्यधिक कठोरता ने सामाजिक और प्रशासनिक चुनौतियां भी उत्पन्न कीं।

केंद्रीकरण की शक्तियां

1. साम्राज्य की एकता

मौर्यकालीन शासन में केंद्रीकरण ने साम्राज्य की एकता को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विशाल भौगोलिक क्षेत्र, जिसमें विभिन्न संस्कृतियां, भाषाएं और परंपराएं शामिल थीं, को एक सूत्र में बांधने के लिए केंद्रीकृत शासन आवश्यक था। सम्राट, विशेष रूप से अशोक, ने अपनी नीतियों और शिलालेखों के माध्यम से साम्राज्य के सुदूर क्षेत्रों में एकरूपता स्थापित की। अर्थशास्त्र के अनुसार, केंद्रीय प्रशासन ने प्रांतों को सम्राट के प्रति जवाबदेह बनाया, जिससे क्षेत्रीय विभेदों के बावजूद साम्राज्य एकजुट रहा। अशोक की धम्म नीति ने विभिन्न समुदायों के बीच सहिष्णुता और एकता को प्रोत्साहित किया, जो केंद्रीकरण का एक महत्वपूर्ण परिणाम था। केंद्रीय नियंत्रण ने विद्रोहों को दबाने और बाहरी खतरों से साम्राज्य की रक्षा करने में सहायता प्रदान की। यह एकता मौर्य साम्राज्य को भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे शक्तिशाली साम्राज्य बनाने में सक्षम थी। हालांकि, यह एकता सम्राट की व्यक्तिगत क्षमता पर निर्भर थी, और अशोक के बाद कमजोर नेतृत्व ने इसे कमजोर किया। फिर भी, केंद्रीकरण ने मौर्य साम्राज्य को एक ऐतिहासिक रूप से स्थिर और एकजुट इकाई के रूप में स्थापित किया।

2. प्रशासनिक दक्षता

केंद्रीकरण ने मौर्यकालीन शासन में प्रशासनिक दक्षता को बढ़ावा दिया, जिससे विशाल साम्राज्य का संचालन सुचारु रूप से संभव हुआ। अर्थशास्त्र और मेगस्थनीज के इंडिका से पता चलता है कि साम्राज्य को प्रांतों में विभाजित किया गया था, जिनका

प्रबंधन सम्राट द्वारा नियुक्त अधिकारियों द्वारा किया जाता था। ये अधिकारी केंद्रीय नीतियों को लागू करते थे, जिससे प्रशासन में एकरूपता और व्यवस्था बनी रही। कर संग्रह, न्याय व्यवस्था और व्यापार नियमन जैसी प्रक्रियाएं केंद्रीय निर्देशों के आधार पर संचालित होती थीं, जिसने प्रशासन को प्रभावी बनाया। जासूसों और धर्ममहामात्रों की प्रणाली ने प्रशासनिक निगरानी को और सुदृढ़ किया। अशोक के शिलालेखों से स्पष्ट है कि केंद्रीय नीतियां साम्राज्य के हर कोने तक पहुंचती थीं, जिससे स्थानीय स्तर पर भी प्रशासनिक कार्यकुशलता बनी रही। इस दक्षता ने साम्राज्य के आर्थिक और सामाजिक विकास को गति दी, जैसे सड़कों और सिंचाई प्रणालियों का निर्माण। हालांकि, अत्यधिक केंद्रीकरण ने नौकरशाही जटिलता को जन्म दिया, फिर भी इसने मौर्य शासन को एक संगठित और प्रभावी प्रशासनिक ढांचा प्रदान किया।

3. सैन्य शक्ति

मौर्यकालीन शासन में केंद्रीकरण ने सैन्य शक्ति को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अर्थशास्त्र के अनुसार, मौर्य साम्राज्य की सेना केंद्रीय नियंत्रण के अधीन थी, जिसका नेतृत्व सम्राट और उनके विश्वस्त सेनापति करते थे। इस केंद्रीकृत सैन्य संगठन ने साम्राज्य को बाहरी आक्रमणों से सुरक्षित रखा और आंतरिक विद्रोहों को दबाने में सहायता प्रदान की। चंद्रगुप्त मौर्य ने सेल्यूकस जैसे शक्तिशाली शत्रुओं को परास्त किया, जो केंद्रीकृत सैन्य शक्ति का प्रमाण है। सेना में प्रशिक्षित सैनिक, युद्ध हाथी, घुड़सवार और पैदल सेना शामिल थे, जिनका प्रबंधन केंद्रीय स्तर पर होता था। अशोक के शासनकाल में, यद्यपि युद्ध नीति में कमी आई, सैन्य शक्ति ने साम्राज्य की स्थिरता बनाए रखी।

मौर्यकालीन शासन में केंद्रीकरण की कमजोरियां

1. अतिनियंत्रण

मौर्यकालीन शासन में केंद्रीकरण की सबसे बड़ी कमजोरी थी अतिनियंत्रण, जिसने साम्राज्य के प्रशासन को कठोर और लचीलापन रहित बना दिया। अर्थशास्त्र के अनुसार, सम्राट और केंद्रीय प्रशासन का प्रांतों, कर संग्रह और व्यापार पर कड़ा नियंत्रण था। यह अतिनियंत्रण स्थानीय आवश्यकताओं और परिस्थितियों को संबोधित करने में बाधक सिद्ध हुआ। विभिन्न सांस्कृतिक और भौगोलिक क्षेत्रों, जैसे तक्षशिला या तोशलि, की विशिष्ट समस्याओं को केंद्रीय नीतियों के तहत समायोजित करना कठिन था। उदाहरण के लिए, एकसमान कर नीतियों ने कुछ क्षेत्रों में असंतोष को जन्म दिया, क्योंकि स्थानीय आर्थिक परिस्थितियों को नजरअंदाज किया गया। अशोक की धम्म नीति, हालांकि सहिष्णुता को प्रोत्साहित करती थी, केंद्रीय स्तर पर लागू होने के कारण स्थानीय परंपराओं के साथ संघर्ष पैदा करती थी। इस अतिनियंत्रण ने स्थानीय अधिकारियों और समुदायों की स्वायत्तता को सीमित किया, जिससे प्रशासन जन-उन्मुख होने में असफल रहा। अशोक के शासनकाल में सम्राट की सक्षमता ने इस कमी को कुछ हद तक नियंत्रित किया, लेकिन उनके कमजोर उत्तराधिकारियों के समय में अतिनियंत्रण ने क्षेत्रीय असंतोष को बढ़ावा दिया। इस प्रकार, केंद्रीकरण की यह कमजोरी साम्राज्य की दीर्घकालिक स्थिरता के लिए हानिकारक सिद्ध हुई।

2. नौकरशाही जटिलता

मौर्यकालीन शासन की केंद्रीकृत नौकरशाही, हालांकि प्रभावी थी, ने जटिलता को जन्म दिया, जो इसकी एक प्रमुख कमजोरी थी। अर्थशास्त्र और मेगस्थनीज के इंडिका में वर्णित विशाल प्रशासनिक ढांचे में अनेक अधिकारी, जैसे अमात्य, समाहर्ता और धर्ममहामात्र, शामिल थे, जो केंद्रीय नीतियों को लागू करते थे। इस जटिल नौकरशाही ने प्रशासन को भारी और कभी-कभी अक्षम बना दिया। केंद्रीय नियंत्रण के तहत प्रांतों और स्थानीय इकाइयों को निर्देश देने में समय और संसाधनों की बर्बादी होती थी। इसके अलावा, जासूसों और अधिकारियों की बहुस्तरीय प्रणाली ने भ्रष्टाचार की संभावना को बढ़ाया। स्थानीय स्तर पर अधिकारी, केंद्रीय आदेशों के प्रति जवाबदेह होने के कारण, अक्सर व्यक्तिगत लाभ के लिए शक्ति का दुरुपयोग करते थे। यह जटिलता साम्राज्य के सुदूर क्षेत्रों में नीतियों के प्रभावी कार्यान्वयन में बाधा उत्पन्न करती थी। अशोक के शासनकाल में उनकी

सक्षम नेतृत्व क्षमता ने इस जटिलता को नियंत्रित किया, लेकिन उनके उत्तराधिकारियों के कमजोर शासन में नौकरशाही की अक्षमता उजागर हुई। इस प्रकार, नौकरशाही जटिलता ने मौर्य शासन की प्रशासनिक दक्षता को कमजोर किया और साम्राज्य के पतन में योगदान दिया।

3. साम्राज्य का पतन

केंद्रीकरण की अत्यधिक निर्भरता मौर्य साम्राज्य के पतन का एक प्रमुख कारण थी। मौर्य शासन की केंद्रीकृत संरचना सम्राट की व्यक्तिगत क्षमता पर आधारित थी, जैसा कि चंद्रगुप्त और अशोक के शासनकाल में देखा गया। अर्थशास्त्र में वर्णित केंद्रीय प्रशासन, सेना और आर्थिक नियंत्रण सम्राट के मजबूत नेतृत्व पर निर्भर थे। अशोक के बाद, कमजोर उत्तराधिकारियों, जैसे दशरथ या बृहद्रथ, इस केंद्रीकृत ढांचे को प्रभावी ढंग से संभालने में असमर्थ रहे। केंद्रीय नियंत्रण की कठोरता ने प्रांतों में स्वायत्तता की कमी को उजागर किया, जिससे क्षेत्रीय विद्रोह और असंतोष बढ़ा। उदाहरण के लिए, तक्षशिला जैसे सुदूर प्रांतों में केंद्रीय नीतियों का विरोध हुआ। इसके अलावा, केंद्रीकृत नौकरशाही और जासूसी प्रणाली कमजोर नेतृत्व में अक्षम हो गई, जिससे प्रशासनिक और सैन्य कमजोरी उजागर हुई। आर्थिक नियंत्रण की कठोरता ने भी स्थानीय समुदायों में असंतुलन पैदा किया। परिणामस्वरूप, मौर्य साम्राज्य का पतन तेजी से हुआ, जब 185 ईसा पूर्व में शुंग वंश ने अंतिम मौर्य सम्राट को परास्त किया। इस प्रकार, केंद्रीकरण, जो साम्राज्य की शक्ति था, इसकी कमजोरी बनकर पतन का कारण बना।

स्थानीय स्वायत्तता

हालांकि मौर्य शासन मुख्य रूप से केंद्रीकृत था, स्थानीय स्तर पर कुछ हद तक स्वायत्तता भी प्रदान की गई थी, जो साम्राज्य की विविधता और विशालता को देखते हुए आवश्यक थी। स्थानीय स्वायत्तता के प्रमुख पहलू निम्नलिखित हैं :—

1. ग्राम और नगर प्रशासन

मौर्यकालीन शासन में ग्राम और नगर प्रशासन को कुछ हद तक स्वायत्तता प्राप्त थी, जो साम्राज्य की विविधता को संभालने में सहायक थी। अर्थशास्त्र के अनुसार, ग्राम स्तर पर ग्रामिक (ग्राम प्रमुख) और नगर स्तर पर नगरिक जैसे अधिकारी स्थानीय प्रशासन संभालते थे। ये अधिकारी स्थानीय विवादों का समाधान, कर संग्रह और सामुदायिक व्यवस्था के लिए जिम्मेदार थे। ग्रामिक को स्थानीय समस्याओं, जैसे भूमि विवाद या सामाजिक मुद्दों, को सुलझाने में स्वतंत्रता थी, जिससे केंद्रीय हस्तक्षेप की आवश्यकता कम होती थी। नगरों में, नगरिक व्यापार, सुरक्षा और स्वच्छता जैसे मामलों का प्रबंधन करते थे। यह स्वायत्तता स्थानीय स्तर पर प्रशासन को जन-उन्मुख और प्रभावी बनाती थी। अशोक के शिलालेखों से पता चलता है कि स्थानीय अधिकारियों को केंद्रीय नीतियों के साथ सामंजस्य बिठाने की छूट थी। हालांकि, केंद्रीय निगरानी के कारण उनकी स्वायत्तता सीमित थी, और भ्रष्टाचार या दुरुपयोग की संभावना बनी रहती थी। फिर भी, ग्राम और नगर प्रशासन की स्वायत्तता ने साम्राज्य की स्थानीय आवश्यकताओं को संबोधित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

2. प्रांतीय स्वायत्तता

मौर्यकालीन शासन में प्रांतीय स्वायत्तता ने साम्राज्य की विशालता को प्रबंधित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साम्राज्य को प्रांतों, जैसे तक्षशिला, उज्जयिनी और तोशलि, में विभाजित किया गया था, जिनका नेतृत्व सम्राट द्वारा नियुक्त राज्यपाल (कुमार या आर्यपुत्र) करते थे। अर्थशास्त्र के अनुसार, इन राज्यपालों को प्रशासनिक और न्यायिक मामलों में सीमित स्वतंत्रता दी गई थी, जिससे वे स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार निर्णय ले सकें। यह स्वायत्तता प्रांतों की भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता को समायोजित करने के लिए आवश्यक थी। उदाहरण के लिए, तक्षशिला जैसे सुदूर प्रांतों में स्थानीय व्यापार और रीति-रिवाजों को बनाए रखने की अनुमति थी। अशोक की धम्म नीति ने प्रांतीय अधिकारियों को सामाजिक सुधारों को लागू करने में लचीलापन प्रदान किया। हालांकि, केंद्रीय नियंत्रण के कारण यह स्वायत्तता पूर्ण नहीं थी, और राज्यपाल सम्राट के प्रति जवाबदेह रहते थे।

इस सीमित स्वायत्तता ने प्रशासन को प्रभावी बनाया, लेकिन केंद्रीय निर्भरता ने प्रांतीय स्वतंत्रता को कमजोर किया, जिससे कुछ क्षेत्रों में असंतोष उत्पन्न हुआ।

3. सामुदायिक परंपराएं

मौर्यकालीन शासन में सामुदायिक परंपराओं को बनाए रखने की स्वायत्तता ने साम्राज्य की सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अर्थशास्त्र और अशोक के शिलालेखों से स्पष्ट है कि मौर्य प्रशासन ने स्थानीय रीति-रिवाजों, धार्मिक प्रथाओं और सामाजिक प्रणालियों का सम्मान किया। अशोक की धम्म नीति ने बौद्ध, जैन, वैदिक और अन्य समुदायों के बीच सहिष्णुता को बढ़ावा दिया, जिससे स्थानीय समुदाय अपनी परंपराओं और उत्सवों को स्वतंत्र रूप से मना सकें। यह स्वायत्तता साम्राज्य के सुदूर क्षेत्रों, जैसे तक्षशिला और तोशलि, में सामाजिक सामंजस्य बनाए रखने में सहायक थी। उदाहरण के लिए, स्थानीय धार्मिक अनुष्ठानों और सामुदायिक सभाओं को प्रोत्साहन दिया गया, बशर्ते वे केंद्रीय नीतियों के विरुद्ध न हों। यह नीति साम्राज्य की एकता को मजबूत करती थी, क्योंकि विभिन्न समुदायों को अपनी पहचान बनाए रखने की अनुमति थी। हालांकि, केंद्रीय प्रशासन की निगरानी ने इस स्वायत्तता को सीमित किया, और कुछ मामलों में स्थानीय परंपराओं को केंद्रीय नीतियों के साथ समायोजित करना पड़ा। इस सीमित स्वायत्तता ने सामाजिक स्थिरता को बढ़ावा दिया, लेकिन केंद्रीय हस्तक्षेप ने कभी-कभी स्थानीय असंतोष को जन्म दिया।

4. आर्थिक स्वायत्तता

मौर्यकालीन शासन में आर्थिक स्वायत्तता ने स्थानीय व्यापार और वाणिज्य को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अर्थशास्त्र के अनुसार, स्थानीय व्यापारिक समुदायों और श्रेणियों (गिल्ड्स) को अपने आर्थिक मामलों में सीमित स्वतंत्रता प्रदान की गई थी। ये श्रेणियां व्यापार, शिल्प और उत्पादन से संबंधित गतिविधियों का प्रबंधन करती थीं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति मिली। उदाहरण के लिए, नगरों में व्यापारी समुदायों को बाजार नियमों और मूल्य निर्धारण में कुछ हद तक स्वायत्तता प्राप्त थी। यह स्वायत्तता स्थानीय स्तर पर आर्थिक नवाचार और समृद्धि को बढ़ावा देती थी, जिससे साम्राज्य की समग्र अर्थव्यवस्था को लाभ हुआ। अशोक के शासनकाल में, सड़कों और व्यापारिक केंद्रों जैसे ढांचागत विकास ने स्थानीय व्यापार को और प्रोत्साहित किया। हालांकि, केंद्रीय कर नीतियों और निगरानी ने इस स्वायत्तता को सीमित किया। व्यापारियों और शिल्पियों पर कठोर कर और नियम लागू किए गए, जिससे कुछ क्षेत्रों में असंतोष उत्पन्न हुआ। इस प्रकार, आर्थिक स्वायत्तता ने स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत किया, लेकिन केंद्रीय नियंत्रण की कठोरता ने इसकी पूर्ण प्रभावशीलता को कम किया।

मौर्यकालीन शासन में स्थानीय स्वायत्तता की शक्तियां

1. स्थानीय आवश्यकताओं का समाधान

मौर्यकालीन शासन में स्थानीय स्वायत्तता ने स्थानीय आवश्यकताओं के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अर्थशास्त्र के अनुसार, ग्राम और नगर स्तर पर ग्रामिक और नगरिक जैसे अधिकारियों को स्थानीय विवादों, जैसे भूमि या सामाजिक मुद्दों, को सुलझाने की स्वतंत्रता थी। यह स्वायत्तता स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार त्वरित और प्रभावी निर्णय लेने में सहायक थी। उदाहरण के लिए, विभिन्न क्षेत्रों की आर्थिक और सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए स्थानीय अधिकारी केंद्रीय नीतियों को समायोजित कर सकते थे। अशोक के शिलालेखों से पता चलता है कि स्थानीय प्रशासन को जनकल्याणकारी कार्यों, जैसे कुओं और विश्रामगृहों के निर्माण, में लचीलापन प्रदान किया गया। यह दृष्टिकोण साम्राज्य के सुदूर क्षेत्रों में जनता की समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता सुनिश्चित करता था। स्थानीय स्वायत्तता ने केंद्रीय प्रशासन पर बोझ कम किया और साम्राज्य की विविधता को प्रबंधित करने में मदद की। इस शक्ति ने प्रशासन को जन-उन्मुख बनाया, जिससे साम्राज्य की स्थिरता और जनता का विश्वास बढ़ा।

2. सांस्कृतिक विविधता का सम्मान

स्थानीय स्वायत्तता ने मौर्यकालीन शासन में सांस्कृतिक विविधता के सम्मान को संभव बनाया। अर्थशास्त्र और अशोक के शिलालेखों से स्पष्ट है कि स्थानीय समुदायों को अपनी धार्मिक प्रथाओं, रीति-रिवाजों और उत्सवों को बनाए रखने की स्वतंत्रता थी। अशोक की धम्म नीति ने बौद्ध, जैन, वैदिक और अन्य समुदायों के बीच सहिष्णुता को प्रोत्साहित किया, जिससे साम्राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में सांस्कृतिक पहचान संरक्षित रही। उदाहरण के लिए, तक्षशिला जैसे प्रांतों में स्थानीय परंपराओं को प्रोत्साहन दिया गया, बशर्ते वे केंद्रीय नीतियों के विरुद्ध न हों। यह स्वायत्तता सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देती थी, क्योंकि विभिन्न समुदाय अपनी सांस्कृतिक विरासत को बनाए रख सकते थे। इस नीति ने साम्राज्य की एकता को मजबूत किया, क्योंकि स्थानीय लोग केंद्रीय शासन को अपनी संस्कृति पर हमला मानने के बजाय इसे स्वीकार करते थे। सांस्कृतिक विविधता के सम्मान ने मौर्य साम्राज्य को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और एकजुट बनाया।

3. प्रशासनिक लचीलापन

मौर्यकालीन शासन में स्थानीय स्वायत्तता ने प्रशासनिक लचीलापन प्रदान किया, जो साम्राज्य की सांस्कृतिक और भौगोलिक विविधता को प्रबंधित करने में महत्वपूर्ण था। अर्थशास्त्र के अनुसार, ग्राम और नगर स्तर पर ग्रामिक और नगरिक जैसे अधिकारियों को स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप निर्णय लेने की स्वतंत्रता थी। प्रांतीय राज्यपालों (कुमार या आर्यपुत्र) को भी प्रशासनिक और न्यायिक मामलों में सीमित स्वायत्तता प्राप्त थी, जिससे वे क्षेत्रीय आवश्यकताओं को संबोधित कर सकते थे। उदाहरण के लिए, अशोक की धम्म नीति को लागू करने में स्थानीय अधिकारियों को लचीलापन दिया गया, ताकि नीतियां स्थानीय संदर्भ में प्रभावी हो सकें। यह लचीलापन केंद्रीय नीतियों को स्थानीय स्तर पर समायोजित करने में सहायक था, जिससे प्रशासन जन-उन्मुख और प्रभावी बना। इस स्वायत्तता ने केंद्रीय प्रशासन पर अत्यधिक निर्भरता को कम किया और स्थानीय समस्याओं, जैसे विवाद समाधान या संसाधन प्रबंधन, का त्वरित समाधान सुनिश्चित किया। हालांकि, केंद्रीय निगरानी ने इस लचीलेपन को कुछ हद तक सीमित किया, फिर भी यह साम्राज्य के प्रशासन को गतिशील और संवेदनशील बनाता था। इस लचीलेपन ने साम्राज्य की स्थिरता को बढ़ाया और प्रशासन को अधिक कार्यकुशल बनाया, जिससे मौर्य शासन की प्रभावशीलता में वृद्धि हुई।

मौर्यकालीन शासन में स्थानीय स्वायत्तता की कमजोरियां

1. केंद्रीय नियंत्रण में कमी

मौर्यकालीन शासन में स्थानीय स्वायत्तता ने केंद्रीय नियंत्रण में कमी को जन्म दिया, जो साम्राज्य की एकता के लिए चुनौती बनी। अर्थशास्त्र के अनुसार, ग्राम और प्रांतीय अधिकारियों को दी गई स्वतंत्रता ने कुछ क्षेत्रों में केंद्रीय नीतियों के प्रभावी कार्यान्वयन को कमजोर किया। स्थानीय अधिकारी, जैसे ग्रामिक या प्रांतीय राज्यपाल, स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लेते थे, जिससे कभी-कभी केंद्रीय निर्देशों की अवहेलना हुई। उदाहरण के लिए, सुदूर प्रांतों जैसे तक्षशिला में स्थानीय स्वायत्तता ने विद्रोह की संभावना को बढ़ाया, क्योंकि केंद्रीय प्राधिकार की पहुंच सीमित थी। अशोक के शासनकाल में उनकी सक्षमता ने इस कमी को नियंत्रित किया, लेकिन कमजोर उत्तराधिकारियों के समय में यह समस्या उजागर हुई। इस कमी ने साम्राज्य की एकरूपता और स्थिरता को खतरे में डाला, क्योंकि स्थानीय स्तर पर स्वतंत्रता ने केंद्रीय शासन के प्रति असंतोष को बढ़ावा दिया। इस प्रकार, केंद्रीय नियंत्रण में कमी स्थानीय स्वायत्तता की एक प्रमुख कमजोरी थी।

2. असमानता

मौर्यकालीन शासन में स्थानीय स्वायत्तता का असमान वितरण एक महत्वपूर्ण कमजोरी थी। अर्थशास्त्र और अन्य सतवतों से पता चलता है कि विभिन्न प्रांतों और क्षेत्रों में स्वायत्तता का स्तर एकसमान नहीं था। उदाहरण के लिए, तक्षशिला जैसे सुदूर प्रांतों

को अधिक स्वायत्तता दी गई, जबकि केंद्रीय प्रांतों, जैसे पाटलिपुत्र, पर कड़ा केंद्रीय नियंत्रण था। इस असमानता ने क्षेत्रीय असंतुलन को जन्म दिया, जिससे कुछ क्षेत्रों में असंतोष और अस्थिरता उत्पन्न हुई। स्थानीय अधिकारियों की स्वायत्तता भी उनकी क्षमता और निष्ठा पर निर्भर थी, जिसके कारण कुछ क्षेत्रों में प्रशासन प्रभावी रहा, जबकि अन्य में अक्षमता बढ़ी। अशोक के शासनकाल में धम्म नीति ने इस असमानता को कुछ हद तक कम किया, लेकिन कमजोर उत्तराधिकारियों के समय में यह समस्या गंभीर हो गई। इस असमानता ने साम्राज्य की एकता को कमजोर किया और क्षेत्रीय विद्रोहों को बढ़ावा दिया, जो अंततः मौर्य साम्राज्य के पतन का कारण बनी।

3. प्रशासनिक दुरुपयोग

मौर्यकालीन शासन में स्थानीय स्वायत्तता ने प्रशासनिक दुरुपयोग की संभावना को बढ़ाया, जो एक प्रमुख कमजोरी थी। अर्थशास्त्र में वर्णित स्थानीय अधिकारियों, जैसे ग्रामिक और नगरिक, को दी गई स्वतंत्रता ने कुछ मामलों में भ्रष्टाचार और पक्षपात को जन्म दिया। इन अधिकारियों ने व्यक्तिगत लाभ के लिए अपनी शक्ति का दुरुपयोग किया, जैसे कर संग्रह में हेराफेरी या स्थानीय विवादों में पक्षपात। केंद्रीय निगरानी, जैसे जासूसों की प्रणाली, ने इस दुरुपयोग को कुछ हद तक नियंत्रित किया, लेकिन यह पूर्ण रूप से प्रभावी नहीं थी। सुदूर क्षेत्रों में केंद्रीय निगरानी की कमी ने दुरुपयोग को और बढ़ाया। अशोक के शासनकाल में उनकी सख्त नीतियों ने इस समस्या को कम किया, लेकिन कमजोर उत्तराधिकारियों के समय में प्रशासनिक दुरुपयोग बढ़ गया। इस दुरुपयोग ने स्थानीय जनता में असंतोष को जन्म दिया और साम्राज्य की प्रशासनिक विश्वसनीयता को कमजोर किया, जो मौर्य शासन के पतन में योगदान देता रहा।

केंद्रीकरण और स्थानीय स्वायत्तता का संतुलन : एक आलोचनात्मक मूल्यांकन

मौर्यकालीन शासन में केंद्रीकरण और स्थानीय स्वायत्तता का संतुलन एक जटिल और महत्वपूर्ण प्रशासनिक प्रयोग था, जो साम्राज्य की सफलता और पतन दोनों का आधार बना। अर्थशास्त्र और अशोक के शिलालेखों से स्पष्ट है कि मौर्य साम्राज्य ने एक मजबूत केंद्रीकृत ढांचा स्थापित किया, जिसमें सम्राट सर्वोच्च प्राधिकारी था। इस केंद्रीकरण ने साम्राज्य को एकता, प्रशासनिक दक्षता और सैन्य शक्ति प्रदान की, जिससे यह भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे विशाल साम्राज्य बना। कर संग्रह, व्यापार नियमन और जासूसी प्रणाली ने केंद्रीय नियंत्रण को सुदृढ़ किया। हालांकि, अत्यधिक केंद्रीकरण ने स्थानीय लचीलापन सीमित किया और नौकरशाही जटिलता को जन्म दिया। दूसरी ओर, स्थानीय स्वायत्तता ने ग्राम, नगर और प्रांतीय स्तर पर प्रशासन को जन-उन्मुख बनाया। ग्रामिक, नगरिक और प्रांतीय राज्यपालों को दी गई सीमित स्वतंत्रता ने स्थानीय आवश्यकताओं को संबोधित किया और सांस्कृतिक विविधता का सम्मान किया। अशोक की धम्म नीति ने इस संतुलन को प्रभावी बनाया, जो सहिष्णुता और केंद्रीय नीतियों को जोड़ती थी। फिर भी, इस स्वायत्तता ने केंद्रीय नियंत्रण में कमी और प्रशासनिक दुरुपयोग को बढ़ावा दिया। अशोक के बाद कमजोर उत्तराधिकारियों ने इस संतुलन को बनाए रखने में असफलता दिखाई, जिससे प्रांतीय असंतोष और विद्रोह बढ़े। केंद्रीकरण की कठोरता और स्वायत्तता की असमानता ने साम्राज्य के पतन को तेज किया। यह संतुलन मौर्य शासन की शक्ति था, क्योंकि इसने विविधता को एकजुट किया, लेकिन इसकी कमजोरियां, जैसे अत्यधिक सम्राट-निर्भरता और क्षेत्रीय असंतुलन, ने 185 ईसा पूर्व में साम्राज्य के पतन में योगदान दिया। यह संतुलन आधुनिक प्रशासन के लिए भी सबक प्रदान करता है, जहां केंद्रीकरण और विकेंद्रीकरण का सामंजस्य एक सतत चुनौती है।

निष्कर्ष

मौर्यकालीन शासन में केंद्रीकरण और स्थानीय स्वायत्तता का संतुलन एक जटिल प्रशासनिक प्रयोग था, जो साम्राज्य की शक्ति और अंततः उसके पतन का कारण बना। अर्थशास्त्र और अशोक के शिलालेखों से स्पष्ट है कि केंद्रीकरण ने सम्राट के नेतृत्व में साम्राज्य को एकता, प्रशासनिक दक्षता और सैन्य शक्ति प्रदान की। सम्राट की सर्वोच्चता, केंद्रीकृत प्रशासनिक ढांचा, आर्थिक

नियंत्रण और जासूसी प्रणाली ने साम्राज्य को भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे विशाल और शक्तिशाली साम्राज्य बनाया। इसने विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों को एक सूत्र में बांधा, जिससे साम्राज्य की स्थिरता और समृद्धि बढ़ी। हालांकि, केंद्रीकरण की अत्यधिक कठोरता ने स्थानीय लचीलापन सीमित किया, नौकरशाही जटिलता को जन्म दिया और सम्राट की व्यक्तिगत क्षमता पर अत्यधिक निर्भरता पैदा की। दूसरी ओर, स्थानीय स्वायत्तता ने ग्राम, नगर और प्रांतीय स्तर पर प्रशासन को जन-उन्मुख बनाया। ग्रामिक, नगरिक और प्रांतीय राज्यपालों को दी गई सीमित स्वतंत्रता ने स्थानीय आवश्यकताओं को संबोधित किया और सांस्कृतिक विविधता का सम्मान सुनिश्चित किया। अशोक की धम्म नीति ने इस संतुलन को प्रभावी बनाया, जो सहिष्णुता और केंद्रीय नीतियों को जोड़ती थी। फिर भी, स्वायत्तता ने केंद्रीय नियंत्रण में कमी, असमानता और प्रशासनिक दुरुपयोग को बढ़ावा दिया। अशोक के बाद कमजोर उत्तराधिकारियों ने इस संतुलन को बनाए रखने में असफलता दिखाई, जिससे प्रांतीय असंतोष और विद्रोह बढ़े। 185 ईसा पूर्व में शुंग वंश द्वारा अंतिम मौर्य सम्राट की पराजय ने इस संतुलन की कमजोरियों को उजागर किया। यह संतुलन मौर्य शासन की सफलता का आधार था, क्योंकि इसने विविधता को एकजुट किया, लेकिन इसकी कमजोरियां, जैसे अत्यधिक केंद्रीकरण और क्षेत्रीय असंतुलन, ने पतन को अपरिहार्य बनाया। यह प्रयोग आधुनिक प्रशासन के लिए भी प्रासंगिक है, जहां केंद्रीकरण और विकेंद्रीकरण के बीच सामंजस्य एक सतत चुनौती बनी हुई है।

संदर्भ सूची :

1. थापर, रोमिला, 2002, अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन, पेंगुइन बुक्स इंडिया, नई दिल्ली।
2. शर्मा, राम शरण, 2005, प्राचीन भारत का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. मजूमदार, रमेश चंद्र, 2001, प्राचीन भारत, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
4. रायचौधरी, हेमचंद्र, 1996, प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
5. सिंह, उपेंद्र, 2008, प्राचीन और प्रारंभिक मध्यकालीन भारत का इतिहास, पेंगुइन बुक्स इंडिया, नई दिल्ली।
6. कौटिल्य, 2006, अर्थशास्त्र (हिंदी अनुवाद), प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. भट्टाचार्य, सच्चिदानंद, 2010, प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था, किताब महल, इलाहाबाद।
8. जायसवाल, के. पी., 2004, हिंदू पॉलिटिक्स, सूर्या प्रकाशन, पटना।
9. मिश्रा, जयशंकर, 1995, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना।
10. पांडे, राजबली, 2003, प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्था, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
11. सिन्हा, के. के., 2012, मौर्यकालीन भारत एक ऐतिहासिक अध्ययन, ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली।
12. त्रिपाठी, राम शंकर, 1999, प्राचीन भारत का इतिहास और संस्कृति, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
13. शर्मा, जे. पी., 2007, प्राचीन भारत में शासन और प्रशासन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
14. वर्मा, विनोद, 2015, मौर्य साम्राज्य का प्रशासन, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली।
15. गुप्ता, परमानंद, 2009, प्राचीन भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।